भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

लोक सभा

तारांकित प्रश्न सं. 197*

12 दिसम्बर, **2025** को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

वैश्विक स्वास्थ्य अनुसंधान

*197. डॉ. विनोद कुमार बिंद:
श्रीमती कमलजीत सहरावत:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) पारंपरिक चिकित्सा और एकीकृत स्वास्थ्य के संबंध में अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की भागीदारी का ब्यौरा क्या है;

(ख) वैश्विक मंचों पर आयुष आधारित अनुसंधान और नैदानिक साक्ष्य प्रस्तुत करने के उद्देश्य क्या हैं;

(ग) क्या इन मंचों पर अन्य देशों के साथ और कर्नाटक राज्य विशेषकर बेंगलुरू के किसी संस्थान द्वारा संयुक्त अनुसंधान, नैदानिक अवलोकन या क्षमता निर्माण के लिए कोई प्रस्ताव किए गए हैं;

(घ) मंत्रालय किस प्रकार अंतर-सांस्कृतिक आयुष प्रदायगी, सुरक्षा निगरानी, अनुसंधान के आदान-प्रदान और वैज्ञानिक साक्ष्यों के प्रकाशन के लिए भागीदारी की संभावनाएं तलाश रहा है; और

(ङ) क्या ऐसे सहयोगों में बेंगलुरु स्थित किन्हीं आयुष अनुसंधान केन्द्रों और विश्वविद्यालयों में शामिल किया गया है/शामिल किए जाने का विचार है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) से (ङ): विवरण सदन के पटल पर रखा गया है।

लोक सभा में 12 दिसम्बर, 2025 को पूछे गए तारांकित प्रश्न संख्या 197* के उत्तर में उल्लिखित विवरण

(क) से (घ): मंत्रालय आयुष में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक केंद्रीय क्षेत्र योजना (आईसी योजना) कार्यान्वित कर रहा है, जिसके तहत, आयुष मंत्रालय आयुष उत्पादों और सेवाओं के निर्यात को बढ़ावा देने हेतु भारतीय आयुष दवा विनिर्माताओं/आयुष सेवा प्रदाताओं को सहायता प्रदान करता है; आयुष चिकित्सा पद्धति के अंतर्राष्ट्रीय प्रचार, विकास एवं मान्यकरण में मदद देता है; हितधारकों के बीच बातचीत तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुष के बाजार विकास को बढ़ावा देता है; विदेशों में आयुष अकादमिक पीठों की स्थापना करके शिक्षाविदों तथा अनुसंधान को बढ़ावा देता है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुष चिकित्सा पद्धतियों के बारे में जागरूकता एवं रुचि बढ़ाने तथा उसे सुदृढ़ करने के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाओं/संगोष्ठियों का आयोजन करता है। आयुष मंत्रालय, आईसी योजना के माध्यम से, विदेशों के प्रतिष्ठित संस्थानों/विश्वविद्यालयों; अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियां और संयुक्त राष्ट्र निकायों जैसे विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के साथ आयुष अनुसंधान एवं विकास/शिक्षण तथा अन्य सहयोग को भी प्रायोजित करता है।

आयुष मंत्रालय ने डब्ल्यूएचओ के साथ निम्नलिखित सहयोग किया है:-

• गुजरात के जामनगर में डब्ल्यूएचओ-वैश्विक पारंपरिक चिकित्सा केंद्र (जीटीएमसी) स्थापित करने के लिए डब्ल्यूएचओ के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इस केंद्र का उद्देश्य, डब्ल्यूएचओ की पारंपरिक चिकित्सा कार्यनीति (2014-23) को कार्यान्वित करने हेतु सहायता प्रदान करना और सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज की यात्रा के हिस्से के रूप में पारंपरिक चिकित्सा की भूमिका को सुदृढ़ करने के लिए नीतियों एवं कार्य योजनाओं को विकसित करने में राष्ट्रों को सहयोग देना है। भारत डब्ल्यूएचओ-जीटीएमसी जैसी पहल के माध्यम से पारंपरिक चिकित्सा में खुद को वैश्विक स्तर पर अग्रणी रूप में स्थापित कर रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ साझेदारी में स्थापित यह केंद्र, पारंपरिक चिकित्सा को बढ़ावा देने और अनुसंधान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह वैश्विक स्तर पर साक्ष्य-आधारित पारंपरिक, पूरक और एकीकृत चिकित्सा (टीसीआईएम) के लिए एक प्रमुख ज्ञान केंद्र के रूप में कार्य करता है। यह निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्यों के साथ दुनिया भर में पारंपरिक चिकित्सा के लिए वैश्विक स्तर पर स्थापित केंद्र (कार्यालय) है: -

- ❖ दुनिया भर में पारंपरिक चिकित्सा (टीएम) पद्धतियों को स्थापित करना।
- ❖ पारंपरिक चिकित्सा से संबंधित वैश्विक स्वास्थ्य मामलों पर नेतृत्व प्रदान करना।
- ❖ पारंपरिक चिकित्सा की गुणवत्ता, सुरक्षा और प्रभावकारिता, पहुंच तथा तर्कसंगत उपयोग सुनिश्चित करना।
- ❖ डेटा एकत्रित करने, विश्लेषण करने और प्रभाव का आकलन करने के लिए, मानदंड, मानक और संबंधित तकनीकी क्षेत्रों में दिशा-निर्देश, टूल्स तथा कार्यपद्धतियां विकसित करना। मौजूदा पारंपरिक चिकित्सा (टीएम) डेटा बैंकों, वर्चुअल लाइब्रेरियों और अकादमिक तथा अनुसंधान संस्थानों के सहयोग से डब्ल्यूएचओ पारंपरिक चिकित्सा (टीएम) सूचना-विज्ञान केंद्र के सृजन की परिकल्पना करना।

❖ उद्देश्यों से संबंधित क्षेत्रों में विशिष्ट क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित करना तथा परिसर, आवासीय या वेब-आधारित, और डब्लयूएचओ अकादमी एवं अन्य कार्यनीतिक भागीदारों के साथ साझेदारी के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।

•13 मई, 2016 को डब्ल्यूएचओ के साथ हस्ताक्षरित परियोजना सहयोग समझौते के परिणामस्वरूप वर्ष 2022 में आयुर्वेद तथा यूनानी प्रशिक्षण एवं अभ्यास हेतु बेंचमार्क दस्तावेज़ प्रकाशित किया गया।

• पारंपरिक एवं पूरक चिकित्सा को स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के साथ एकीकृत करने संबंधी डब्ल्यूएचओ और आयुष मंत्रालय के बीच हुए परियोजना सहयोग समझौते के परिणामस्वरूप, आयुर्वेद, यूनानी तथा सिद्ध शब्दावली दस्तावेज़ डब्ल्यूएचओ द्वारा प्रकाशित किया गया है।

• आयुष मंत्रालय और विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के बीच 24 मई, 2025 को एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, जिसका उद्देश्य स्वास्थ्य उपचारों के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (आईसीएचआई) के लिए पारंपरिक चिकित्सा उपचार संबंधी श्रेणियां एवं सूचकांक विकसित करना है, जिसमें समग्र दृष्टिकोण को अपनाते हुए, आयुर्वेद, सिद्ध तथा यूनानी जैसी पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर जोर दिया जाना है। यह समझौता, स्वास्थ्य उपचारों के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (आईसीएचआई) में पारंपरिक चिकित्सा का एक समर्पित मॉड्यूल विकसित किए जाने के कार्य का शुभारंभ है। यह पहल, भारत की उस दृष्टिकोण के अनुरूप है, जिसके अंतर्गत पारंपरिक ज्ञान-विज्ञान की समृद्ध विरासत को, वैज्ञानिक वर्गीकरण और अंतर्राष्ट्रीय मानकों के आधार पर वैश्विक स्वास्थ्य-प्रणाली की मुख्यधारा में शामिल किया जाना है।

• इसके अतिरिक्त, आयुष मंत्रालय द्वारा पारंपरिक चिकित्सा एवं होम्योपैथी के क्षेत्र में सहयोग हेतु विदेशों के साथ 25 देश-दर-देश स्तर के समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए, विदेशों में आयुष अकादमिक पीठों की स्थापना के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ 15 समझौता ज्ञापनों, तथा सहयोगी अनुसंधान/शैक्षणिक सहयोग हेतु विदेशी संस्थानों के साथ 52 संस्थान-दर-संस्थान स्तर के समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए और वैश्विक स्तर पर आयुष के प्रचार-प्रसार हेतु 39 बाहरी देशों में 43 आयुष सूचना प्रकोष्ठों की स्थापना हेतु सहायता दी गई। इसके अलावा, आयुष मंत्रालय अंतर्राष्ट्रीय आयुष फैलोशिप/छात्रवृत्ति कार्यक्रम के अंतर्गत, विदेशी नागरिकों को भारत के मान्यता प्राप्त आयुष शैक्षणिक संस्थानों में आयुष पाठ्यक्रमों के अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति प्रदान करता है।

(ङ): केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) आयुष मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय है। यह परिषद, आयुर्वेद चिकित्सा में वैज्ञानिक तर्ज पर अनुसंधान के निरूपण, समन्वय, विकास और प्रचार के लिए भारत में एक शीर्ष निकाय है। सीसीआरएएस के कार्यकलाप भारत-भर में स्थित इसके 30 संस्थानों/केन्द्रों के माध्यम से और विभिन्न विश्वविद्यालयों, अस्पतालों तथा संस्थानों के साथ सहयोगात्मक अध्ययनों के जरिए चलाए जाते हैं। कर्नाटक राज्य में सीसीआरएएस का एक संस्थान यथा केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु में कार्य कर रहा है।

*****